Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-2, September-2018

मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का लिंगभेद तथा विद्यालय की प्रकृति के संदर्भ में अध्ययन

डॉ. मीना सिरोला
एसोसिएट प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान

अन्नपूर्णा शर्मा
रिसर्च स्कॉलर, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का लिंगभेद तथा विद्यालय की प्रकृति के संदर्भ में अध्ययन किया गया। न्यादर्श हेतु राजस्थान राज्य में स्थित मूक बधिर विद्यार्थियों (130 छात्र एवं 60 छात्रा) को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से चयन किया गया। मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्या को मापन हेतु स्वनिर्मित अध्ययन सम्बन्धी समस्या प्रश्नावली का प्रयोग किया गया । प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मूल्य का प्रयोग किया गया। परिणाम दर्षाते हैं कि मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का लिंगभेद तथा विद्यालय की प्रकृति के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र का जीवन उसकी शिक्षा प्रणाली द्वारा अनुप्राणित होता है। यह किसी देष की सभ्यता-संस्कृति का वर्तमान स्पंदन एवं भविष्य की दृष्टि है। यह वह दर्पण है जिसमें किसी राष्ट्र की अस्मिता प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होती है। शिक्षा प्रणाली ही समाज व राष्ट्र को गति प्रदान करती है। इसीलिए शिक्षा को सर्वदा ही मानव विकास के लिए आवष्यक माना गया है। शिक्षा न सिर्फ व्यक्ति के विकास का साधन है बल्कि यह किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक उत्थान का सबसे शक्तिषाली माध्यम है राष्ट्र का विकास तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक उसका हर व्यक्ति शिक्षित न हो जाए। शिक्षा ही एकमात्र वह साधन है जो पषु और मानव में अन्तर लाने का कार्य करती है। शिक्षा ही वह ज्योतिपुंज है। जो मानव मस्तिष्क के अन्धकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाष को आलोकित करती है। समाज में एक ऐसा वर्ग भी पाया जाता है जो अपनी विषेष स्थिति के कारण उपेक्षा का पात्र बना हुआ है यह वर्ग है - विशिष्ट बालकों का वर्ग। इस वर्ग के बालकों में मूक बधिरता एक चुनौती है। मूक बधिर बालक ऐसे बालक हैं जो न तो बोल सकते हैं और न ही सुन सकते हैं जिस कारण मूक बधिर बालकों के सामने अनेक समस्याएँ आती हैं जो उनके शिक्षण को विपरीत रूप से प्रभावित करती है। ये समस्याएँ हैं- शिक्षण अधिगम सम्बन्धी, छात्र शिक्षक सम्बन्ध, भौतिक वातावरण, मूल्यांकन प्रक्रिया एव अन्य सुविधाएँ सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पडता है।

इस हेतु शोधार्थी द्वारा मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं से सम्बन्धित विभिन्न शोध साहित्यों का अध्ययन किया गया जिससे शोधार्थी के समक्ष मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं से सम्बन्धित विभिन्न विचारधाराएँ सामने आईं जिनकों ध्यान में रखकर शोधार्थी द्वारा इस विषयवस्तु को चुना गया। शोधार्थी द्वारा मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं से सम्बन्धित साहित्य का

विभिन्न चरों के माध्यम से अध्ययन किया गया यथा-लेले, वैजयन्ती और खालेदकर, आरती (1994); बाला.एम (1995), परांजपे संध्या (1996);ष्षर्मिष्ठा, पी.एस.(2003), सैकिया पाॅली (2011), गालवे, तान्या एम. (2011) एवं टेसू भाटी (2017)। अन्ततः शोधार्थी के समक्ष विचार आया कि मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जाये।

अतः उपर्युक्त विवेचन के फलस्वरूप शोधार्थी के सम्मुख कुछ स्वाभाविक प्रश्न उत्पन्न हुए जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन का कारण बने। ये प्रश्न निम्न हैं-

- मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ किस प्रकार होती हैं?
- क्या मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में लिंगभेद आधार पर विभिन्नताएँ प्रेक्षित होती हैं ?
- क्या मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत मूक बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में विद्यालय की प्रकृति के आधार पर विभिन्नताएँ प्रेक्षित होती हैं ?

उद्देश्य

मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का निम्नलिखित संदर्भ में अध्ययन करना।

- लिंगभेद (छात्र एवं छात्रा)।
- विद्यालय प्रकृति (सरकारी विद्यालय एवं गैर सरकारी विद्यालय)

परिकल्पनाएँ

1 मूक बधिर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र और छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2 सरकारी एवं गैर सरकारी मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

संक्रियात्मक शब्दों का परिभाषीकरण

(1) मूक बधिर - प्रस्तुत अध्ययन में मूक बधिर से आशय ऐसे बच्चों से है जो श्रवण शक्ति और वाणी शक्ति खो चुके हैं और सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

(2) सरकारी विद्यालय - ऐसे विद्यालय जिनका संचालन एवं देखरेख की सम्पूर्ण जिम्मेदारी राज्य सरकार की होती है। प्रस्तुत अध्ययन में सरकारी विद्यालयों से तात्पर्य राज्य सरकार की देखरेख में संचालित मूक बधिर विद्यालयों से है।

(3) गैरसरकारी विद्यालय - ऐसे विद्यालय जिनका संचालन एवं देखरेख की सम्पूर्ण जिम्मेदारी राज्य सरकार की न होकर एक निजी संस्था / समिति की होती है। प्रस्तुत अध्ययन में गैरसरकारी विद्यालयों से तात्पर्य निजी संस्था / समिति की देखरेख में संचालित मूक बधिर विद्यालयों से है।

(4) अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ - अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं से तात्पर्य मूक बधिर विद्यार्थियों को अध्ययन के दौरान आने वाली विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों यथा- शिक्षण अधिगम सम्बन्धी, छात्र-शिक्षक सम्बन्ध, भौतिक वातावरण, मूल्यांकन प्रक्रिया सम्बन्धी, अन्य सुविधाओं से है।

(54) माध्यमिक स्तर - प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से तात्पर्य दसवीं कक्षा में अध्ययनरत मूक बधिर छात्र और छात्राओं से है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में राजस्थान में स्थित मूक-बधिर विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

शोधार्थी ने अध्ययन के उद्देष्यों के अनुसार राजस्थान में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययरत दसवीं कक्षा के कुल 190 विद्यार्थियों (130 छात्र तथा 60 छात्राओं) का चयन किया गया। इसके अन्तर्गत 109 सरकारी विद्यालय और 81 गैर सरकारी विद्यालय विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया।

अध्ययन के चर

(1) स्वतंत्र चर - मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययरत विद्यार्थी,
सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय।

(2) आश्रित चर - अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ।

प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यानुसार प्रदत्त प्राप्ति का स्रोत राजस्थान राज्य में स्थित सरकारी एवं गैर सरकारी मूक-बधिर विद्यालयों में अध्ययरत दसवीं कक्षा के विद्यार्थी है। अतः अध्ययन का स्रोत प्राथमिक है।

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

अध्ययन सम्बन्धी समस्याऐं प्रश्नावली - स्वनिर्मित।

सांख्यिकीय

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मूल्य का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं विवेचना

परिकल्पना-1 मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र और छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या-1

मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र और छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्यायें

क्र.सं.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य
1	छात्र	130	36.13	3.00	1.05
2	छात्रा	60	35.57	3.12	

df=188 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 1.64 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र और छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को प्रदर्शित किया गया है। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का मध्यमान 36.13 एवं मानक विचलन 3.00 है वहीं छात्राओं का मध्यमान 35.57 एवं मानक विचलन

3.12 है I df 188 के लिए टी-मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.64 है जबकि अवकलित टी-मूल्य 1.05 है अर्थात अवकलित टी-मूल्य सारणी- मूल्य से कम है।

अतः परिकल्पना 'मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र और छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है I' स्वीकृत की जाती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र और छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना-2 सरकारी और गैर सरकारी मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या -2

सरकारी और गैर सरकारी मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य
1	सरकारी विद्यालय	109	37.70	3.56	0.22
2	गैर सरकारी विद्यालय	81	37.59	3.59	

df=188 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 1.64 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 में सरकारी और गैर सरकारी मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को प्रदर्शित किया गया है। सरकारी मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मध्यमान 37.70 एवं मानक विचलन 3.56 है। वहीं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मध्यमान 37.59 एवं मानक विचलन 3.59 है। df 188 के लिए टी-मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.64 है जबकि अवकलित टी-मूल्य 0.22 है अर्थात अवकलित टी-मूल्य सारणी- मूल्य से कम है।

अतः परिकल्पना 'सरकारी और गैर सरकारी मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' स्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि सरकारी और गैर सरकारी मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध परिणाम

प्रस्तुत शोध के परिणाम यह दर्शाते है कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर नहीं पाया जाता है। अर्थात् छात्र और छात्राओं की अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ समान होती है। साथ ही सरकारी और गैर सरकारी मूक बधिर विद्यार्थी में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के अन्तर नहीं पाया जाता है अर्थात् सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ समान होती है।

शोक्षिक निहितार्थ

S अभिभावकों की दृष्टि से

प्रस्तुत शोध से मूक-बधिर बालकों के अभिभावकों को अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं - शिक्षण अधिगम सम्बन्धी, छात्र-शिक्षक सम्बन्ध, भौतिक वातावरण, मूल्यांकन प्रक्रिया एवं अन्य सुविधाओं के उचित प्रयोग न होने से उत्पन्न कठिनाइयों को समझने में मदद मिलेगी और वे अपने बच्चों के साथ

ही प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों से भली प्रकार से संवाद कर पाएँगे साथ ही विद्यार्थियों के अध्ययन को सुचारू रूप देने में मदद कर पाएँगें।

s विद्यालय प्रशासन की दृष्टि से

प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यालय प्रशासन की दृष्टि से उपयोगी है क्योंकि विद्यालय प्रशासन मूक-बधिर बालकों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को समझ कर उनके निदान हेतु प्रयास कर पाएगा। विद्यालय-प्रशासन प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था करके, उन्हें आवष्यक आधारभूत शैक्षिक एवं सह शैक्षणिक सुविधाएँ प्रदान करके मूक-बधिर बालकों को शैक्षिक स्तर उच्च बनाने में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर सकेंगे। विद्यालय प्रबन्धन मूक-बधिर बालकों हेतु उचित एवं उपयोगी संसाधनों की व्यवस्था कर उनकी शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक गुणवत्ता को बढाने में सहयोग प्रदान कर सकता है।

s शिक्षा के नीति निर्माताओं की दृष्टि से

प्रस्तुत शोध से राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर मूक-बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बधिर विद्यार्थियों हेतु वास्तविक धरातलीय परिस्थितियों के आधार पर नीति निर्माण में मदद मिल सकेगी। मूक-बधिर विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं पर केन्द्रित नीतियों का निर्माण किया जा सकेगा। साथ ही उपयुक्त संसाधन और उचित वातावरण उपलब्ध कराने में सरकार को अनुषंसा कर सकेंगे। जिससे इस वर्ग को समुचित लाभ मिल सकेगा।

आगामी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएँ सीमित है तथा चरों को लेकर अध्ययन किया गया है, इसी प्रकार का अध्ययन विस्तृत परिक्षेत्र तथा अधिक न्यादर्शों पर किया जा सकता है। इस दृष्टि से निम्नलिखित सुझाव अपेक्षित हैं-

1. प्रस्तुत शोध में मूक-बधिर विद्यार्थियों चुना गया है। इसके अतिरिक्त भावी शोध अध्ययन हेतु अन्य श्रेणी यथा- शारीरिक विकलांग, मानसिक विकलांग एवं दृष्टि विकलांग को भी सम्मिलित कर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है इसे मूक-बधिर विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों - प्रधानाचार्यो की समस्याओं पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध में केवल मूक-बधिर विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त भावी शोध हेतु सामान्य विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध में केवल माध्यमिक स्तर के मूक-बधिर विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त भावी शोध हेतु प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के मूक-बधिर विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत सीमांकित किया गया है।

1. राजस्थान में स्थित सरकारी एवं गैर सरकारी मूक-बधिर विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर की कक्षा दसवीं के मूक-बधिर विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

3. प्रस्तुत शोध में अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के केवल पांच आयामों- शिक्षा अधिगम सम्बन्धी, छात्र-शिक्षक सम्बन्धी, भौतिक वातावरण सम्बन्धी, मूल्यांकन प्रक्रिया सम्बन्धी, अन्य सुविधाओं से सम्बन्धी समस्याओं को सम्मिलित किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, जे.सी. (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेषन्स।
- बाजपेयी, एल.बी. एण्ड बाजपेयी, अमिता (2006), विशिष्ट बालक, लखनउ: भारत बुक सेन्टर।
- बलसारा, मैत्रेया (2014), इन्क्लूषिव एजुकेशन फॉर स्पेशल चिल्ड्रन, नई दिल्ली: कनिष्का पब्लिषर्स एण्डडिस्ट्रीब्यूटर्स ।
- बुच, एम.बी. (1983-88), फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, वाल्यूम द्‌वितीय, नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.।
- दास, एन. (2003), इन्टीग्रेटेड एजुकेशन फॉर चिल्ड्रन विद स्पेशीयल नीड, नई दिल्ली: डोमीनेन्ट पब्लिषर्स।
- गैरेट, एच.ई. (2006), स्टेटिक्स इन साइकोलाजी एण्ड एजुकेशन, नई दिल्ली: कोसमाॅस पब्लिकेषनस।
- गुप्ता, एस. पी. (2005), सांख्यिकीय विधिया, इलाहाबाद: षारदा पुस्तक भवन।
- हाॅल, जी.स्टेनले (2003), प्रोफेट्स आफ एजुकेशन (प्राबलम्स आफ एजुकेशन), नई दिल्ली: सरूप एण्ड सन्स।
- हिफ्जुर, रहमान (2007), हिस्ट्री आफ स्पेशल एजुकेशन इन इण्डिया, नई दिल्ली: संजय प्रकाषन।
- मंगल, एस.के. (2016), एज्यूकेटिंग एक्सेप्षनल चिल्ड्रन, एन इन्ट्रोडक्षन टू स्पेशल एजुकेशन, नई दिल्ली: पी.एच.आई.लर्निंग प्रा. लि.।